पतंग वाली गली

सुषमा मुनीन्द्र

पतंग वाली गली

सुषमा मुनीन्द्र

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2023

© सुषमा मुनीन्द्र

अनुक्रम

नेह नाते	3
पतंग वाली गली	30
सपने और नियति	74
स्कूल चलें हम	101
शुभ सात कदम	131
बात निकली लेकिन दूर तलक नहीं गई	154

आठ नवम्बर दो हजार सोलह।

आज रात बारह बजे के उपरांत हजार और पाँच सौ के नोट नहीं चलेंगे।

ज्योति का न बैंक खाता सम्पन्न है, न घर में नोटों के बंडल रखे हैं फिर भी टी.वी पर आ रही अप्रत्याशित खबर ने उसे चिंतित कर दिया। उसकी चिंता चार बहनों के बाद बड़े अरमान से जन्मे भाई, चन्द्रमा को लेकर है। ज्योति फिर कीर्ति फिर प्रीति फिर नीति....। बाबू को हर बार सदमा लगा, आजी ने हर बार एक दिन का अन्न त्याग किया, दिन भर रोने से अम्मा की आँखें फूल गई। बिजावर के उस छोटे से घर को एक नर शिशु का इंतजार था। घर की प्रबल इच्छा शक्ति कहे या स्वाभाविक तौर पर चन्द्रमा का जन्म होना ही था। ज्योति अतिरेक से भर गई थी -

‘‘कितना गोरा है। चंदा मामा की तरह।’’

बाबू ने पहली बार प्रबलतम भाव से पितृत्व को महसूस किया ‘‘तुम बहनों का चंदा मामा। इसका नाम चंद्रमा होगा।’’

चार पुत्रियों का जमावड़ा देख असहिष्णु हो चली अम्मा ने कुलीन स्त्री की तरह व्यवहार किया ‘‘चंद्रमा अच्छा नाम है।’’

बधाई गाती आजी ने अनुमोदन किया ‘‘घर में उजियारा कर देगा।’’

नोटबंदी का समाचार सुनकर ज्योति इसी चंद्रमा के लिये चिंतित है। आयकर अधिकारी है। बहनों के सम्मुख अपनी पूँजी का खुलासा नहीं करता लेकिन उसका रहन-सहन बताता है कितना सम्पन्न है। बिजावर के छोटे घर में रहते हुये चंद्रमा का स्तर बहनों से परिष्कृत रहता था। अब तो राजा और रंक जैसा फर्क आ गया है। पता नहीं कितना बैंक में रखे होगा, कितना घर में। नोटबंदी की खबर सुनकर बेचारे का रक्त चाप नीचे न सरक जाये। भंगिमा से ही नहीं, चेहरे से भी अमीर जान पड़ती उसकी पत्नी कामाक्षी, जिसका स्लोगन है - पैसा लड़ाई की जड़ होता है... अचेत हो गई होगी। ज्योति को चन्द्रमा से सेल फोन पर पूछताछ करने की व्याकुलता हुई पर वह खुलासा नहीं करेगा। सेल पर पूछताछ सुरक्षित भी नहीं। कामाक्षी जरूर कहेगी चंद्र मेरा इतना रुपिया चलन से बाहर हुआ जा रहा है। ज्योति जीजी मंगल मना रही है।

टी.वी देख रहे कर्ण ने ज्योति की व्याकुलता को परखा -

''धन कुबेरों की टाँय-टाँय फिस्स। माँ, तुम्हारे पास हजार और पाँच सौ के कितने नोट हैं ?''

''दस-पन्द्रह होंगे। चंद्र की फिक्र हो रही है।''

''मामा जानें और सर्वश्रेष्ठ का गुमान रखने वाली मामी जानें।''